राधास्वामी संत संदेश

मासिक समाचार पत्रिका

वर्ष : 7 अंक : 91 15 नवम्बर 2004

सदस्यता शुल्क : ——— भारत, नेपाल व सिक्किम में

वार्षिक : रुपए 40/- एक प्रतिः रुपए 5/-

इस अंक में

1.	बड़े महाराज संत ताराचन्द जी द्वारा फर्माया सत्संग	2
2.	ध्यानाकर्षण बिन्दू व सूचना	51
3.	अहंकार (महर्षि शिवव्रतलाल जी)	52
4.	लघु कथा	53
5.	अनमोल वचन व ज्ञान-सार	54
6.	सत्संग सार	55
7.	सतगुरु कृपा	58
8.	सेवादारों के लिए विशेष सूचना	60

राजीव कुमार लोहिया, मुद्रक एवं प्रकाशक द्वारा अपने स्वामित्व में राधास्वामी सत्संग प्रेस हालू बाजार, भिवानी से मुद्रित तथा कार्यालय, हालू बाजार, भिवानी से प्रकाशित

फोन नं. : 01664-241570 (भिवानी आश्रम)
01664-265094 (दिनोद आश्रम)

वेबसाइटः- www.radhaswamidinod.org

इ-मेलः- info@radhaswamidinod.org

भिवानी : कैसेट क्रमांक : 100

दिनांक : 11 नवम्बर, 1992

समय : प्रातः

राधास्वामी! राधास्वामी दयाल की दया!!
राधास्वामी सहाय!!! राधास्वामी!

प्रेमियो, सत्संगियो, माताओ और बहनों! जितने सत्संग प्रेमी आए हुए हैं सब से विनती है कि जब तक सत्संग हो शांति से सुनते रहें।

मैं भी आपकी हाजरी में ५–१० मिनट आ गया कि सब के दर्शन कर लूंगा। सुबह का टाइम है। बड़ी खुशी की बात तो यह है कि दो तीन दिनों से सत्संग था, हजूर की दया से सब शांति रही। शांति से सत्संग होता रहा। यही मेरे मालिक की, सतगुरु की अपार दया है। मैं उन सेवादारों को आर्शीवाद देता हूं जिनको तीन–तीन, चार–चार दिन हो गए। जिनकी जहां ड्यूटी है वे बहुत चौकस होकर अपना काम कर रहे हैं। इतना काम तो कोई फौजी जिसका बड़ा भारी काम होता है वह भी मोर्चे पर नहीं कर सकता है। इतना निश्चिंत हो कर। इन्होंने बहुत होशियारी और प्यार से काम किया है। इसी को प्रेम का मार्ग कहते हैं। सच पूछा जाए तो फौजी तो तनख्वाह लेते हैं। इनकी तनख्वाह इतनी भारी है कि कोई चुका ही नहीं सकता। यह न सोचना कि ये तनख्वाह नहीं लेते हैं। ये सेवादार भी तनख्वाह लेते हैं। पर फौजी मांगकर लेते हैं इनको बिना मांगा वेतन मिलता है। वे फनां होने वाली चीजें मांग कर लेते हैं जोकि सब ही मिट जाती हैं। इनको बिना मांगी

वह चीज मिलती है जो कभी भी मिटने वाली नहीं है। वह कौन सी चीज है? सच पूछा जाए तो मालिक इनको ऐसी शांति दे कि ये चौरासी का मुंह कभी भी न देखें। इन सेवादारों ने बड़ी भारी सेवा की ड्यूटी निभाई है और करते ही रहते हैं। हमारे सत्संगी सेवादार आगे जाकर समझ जाएंगे। अब जो कमी है वह आप लोगों को मैं बता देता हूं। कई लोग घर में एक–एक ही काम करने वाले होते हैं वे भी सेवा में नाम लिखा। प्यार तो उनका सेवा करने में बड़ा भारी है पर घर से वे यहां आ ही नहीं सकते हैं। दो या तीन दिन पहले इनको आना पड़ता है। कई तो यहां आठ तारीख को ही आ गए थे। आने का दिन भी था। चिट्ठियां भी भेजी थी। पर कइयों के घर में काम था। घर में एक आदमी ही काम करने वाला होता है वह नहीं आ सकता। इसीलिए उनके कारण यहां कुछ, सेवा में कमी हो जाती है। ऐसी कोई जबरदस्ती भी नहीं है। जो भाई अकेले हैं और घर पर उनको ज्यादा काम है वे कह दें कि हम आ नहीं सकते हैं तो ही अच्छा है। नाम लिखाने वाले और सेवा करने वाले सत्संगी तो और भी मिल जाएंगे। सेवा का तो उन्हीं सत्संगियों को बिल्ला लेना चाहिए जो एक दिन पहले आ जाएं। ६ तारीख को सत्संग शुरू था तो आठ को आ जाएं। आप सेवादारों के लिए साल में दो ही दिन आते हैं। दो कौन से? एक तो फाल्गुण की दसवीं का सत्संग और एक यह पूर्णमासी का सत्संग। जो मासिक है, उसमें तो तुम्हारी मर्जी है। उनमें तो जिनका ज्यादा प्यार है और जो नजदीक है ड्यूटी देने वाले आ जाते हैं यह उनकी मौज हैं। पर इन दो सत्संगों में तो सेवादारों को एक दिन पहले आ जाना चाहिए। जैसे कल नामदान है तो उन्हें आज ही आना चाहिए। तब वे आकर अपना सब काम संभाल लेते हैं। आगे के लिए मैं इन सत्संगियों को व प्रेमियो को एक बात समझाता हूं। अगर इस तरह से न आ सकें तो वे अपना नाम कटवा जाएं।

कई–कई ऐसे काम हो जाते हैं कि नहीं आया जा सकता है। बीमार भी हो सकता है। मेरे पास था एक भाई, नफेसिंह का लड़का। वह बीमार था और बहुत पछता रहा था कि मैंने सेवादारों में नाम लिखवा रखा था। मैंने कहा–कोई बात नहीं है। तेरी हाजरी मैं लगवा दूंगा। बीमारी तो बहुत बुरी होती है और वह तो लाचारी होती है। सेवादारों भाइयों को, सेवादार तो सब से बड़ा होता है। सेवादार का बदला तो खुदा भी नहीं उतार सकता है। बताओ संसारी तो उतार ही क्या सकते हैं? उनका तो यही एक बदला उतारना है कि मालिक उनको फिर इस संसार में न भेजे। यह तुम्हें पता भी है कि सेवा में कितना गुण है?

सेवा सिद्ध सफलता, सेवा विजय अपार।

सेवा में सिद्धि भी आ जाती है और सफलता भी मिल जाती है। सेवा में विजय हो जाती है।

सेवा में मेवा मिले, सेवा में करतार।।

हमारे शास्त्र कहते हैं कि सारी चीजें, सेवा से मिल जाती हैं। सेवा बड़ी भारी और ऊंची चीज है। इनको चार दिन लगते हैं, ये आठ ता० को आये थे ६, १०, ११ चार दिन हो गये हैं। इन सेवादारों को वर्ष में आठ दिन निकालने पड़ते हैं। देख लो। उन्हें ही सेवा में जरूर अपना नाम देना चाहिए। दूसरे कई–कई माता–बहनें भंडारे की सेवा में नाम लिखवाए हुए हैं। वे रोटी बनाती हैं। जिनसे खाना नहीं बन सकता वे अपना नाम सेवा में बिल्कुल न दें। जो खाना प्यार प्रेम से बनाती है वह अपना नाम लिखवा लो बिल्ला भी लो और अपनी सेवा करो। उनकी चार–पांच दिन की बड़ी तगड़ी सेवा है। अरे! रोटी देने वाला तो वैसे ही तिर जाता है। तुम माता बनकर रोटी बनाती हो। यह कितनी भारी सेवा है। रोटी चाहे भाई बनाता हो चाहे बहिन बनाती हो। खाना बनाने वाला तो पवित्र और समझदार होना चाहिए। सो उन्हें ही अपना नाम देना

चाहिए जो चार दिनों तक सेवा कर सकते हों। अगर कोई कह दे कि हम सेवा नहीं कर सकते हैं। फिर क्या करोगे? यह तो मालिक ही जानता है कि वह क्या करेगा और भी कोई न कोई बंदोबस्त हो जाएगा। पर मुझे पता है कि मेरी बहनों को, कइयों को तो इतनी विरह और तड़प है कि हम ही सेवा करें और कोई भी न करें। सभी मिलकर प्यार से सेवा किया करो। प्रसाद बनाने की सेवा में जिन्हें अपना नाम लिखाना है लिखवा दो। पर मैंने बताया कि जिसको चार दिन की अपने घर से छुट्टी मिल सकती है वही सेवा में नाम लिखवाए। जिसको चार दिन छुट्टी न मिले वे न लिखवाएं। क्यों? घर में अगर तकरार हो जाती है तो अच्छा नहीं है। सेवा तो, मैंने आपको बताया कि उसकी तनख्वाह तो सब से बड़ी है और सारी जिन्दगी समाधि लगा–लगा कर प्लाथी लगा–लगा कर बैठने में वह तनख्वाह तो पूरी नहीं पड़ती है। वह मालिक सेवा देख कर दया करके खुश होकर एक ही दिन में बख्शीश दे देता है। एक मिसाल देता हूं। एक बार की बात है बाबा सांवण सिंह महाराज ने कहा कि क्या कोई सेवा करना चाहता है? आइए, वहां खेत में कोई सेवा है। साफ करने की कोई सेवा थी। संगत पर मेरे जैसे कई थे, वे मंहत बने हुए थे जैसे हमारे यहां भी कई मंहत आए थे। वे मेरे से भी नहीं मिले। उनका काम सत्संग में हाजरी देना था। वे मंहत चले गए। रात को शब्द गाए। क्या वे मंहत बन गए? वे तो गिरावट में आ जाते हैं। आप सभी जानते हो। यह तो सत्संग था। शब्द गाने और प्यार से सुनने वालों को फायदा होता है। पर मैं किसी का नाम नहीं लेता हूं। नाम लूं तो क्या करूंगा? क्या उनको खुद ही पता नहीं है? आप सत्संगी नहीं जानते हो यह उनकी गिरावट थी। ऐसे ही गिरावट उनकी हो जाती है जो नाम लिखवा देते हैं और फिर आना–कानी करते हैं कि आना जाना तो मेरे से नहीं हो सकता। कोई बात नहीं। वे अपना बिल्ला दे देवें।

अपना नाम उतरवा लें। बाबा सावण सिंह खेत में जाने लगे तो मेरे जैसे कई निकम्मे आदमी आपनी मान बड़ाई वाले थे। उन्होंने कहा–हमने तो ध्यान में बैठना है। हम सेवा में नहीं जा सकते हैं। उन्होंने कहा–आप तो महात्मा हो ध्यान में बैठ जाओ। सब ध्यान में बैठो। वे ध्यान में बैठ गए। सेवा करने वाले, जैसे मदन है, शब्द गा रहा था इस तरह के बावले और पगले थे। वे महाराज जी के साथ चले गए और कुंडी ढोते रहे। काम करते रहे। जब बाबा सांवण सिंह वापस आए तो मेरे जैसे जो बड़े भारी मंहत बनकर ध्यान में बैठ गए थे, वे ध्यान में से उठकर उनके साथ में आ गए। उन्होंने बंदगी की। महाराज जी ने कहा–बैठ जाओ। महाराज बाबा सावण सिंह जी बैठ गए। उन्होंने कहा–मैं आप लोगों को एक बात बताता हूं, सुनो। आप लोगों ने किसका ध्यान किया? उन्होंने कहा–हजूर ! हमने तो सतगुरु का ही ध्यान किया है। उन्होंने कहा–आप सतगुरु के ध्यान किया है। उन्होंने कहा–आप सतगुरु के ध्यान से नहीं सतगुरु के वचन से तिरोगे। ध्यान तो इन्होंने किया जो मेरे साथ गऐ थे। वे कुंडी डाल रहे थे। तुम तो सतगुरु का ध्यान अंतर में कर रहे थे। ये बाहर सतगुरु का वचन भी निभा रहे थे और दर्शन भी कर रहे थे। क्या इस बात को समझे कि नहीं? तुम ध्यान किसका करते थे? क्या तुम्हारा किसी का ध्यान बना? तुम वचन भी नहीं निभा सके। दोनों दीन से चले गए। ये दोनों काम कर गए। इन्होंने दर्शन भी किए और हुक्म भी माना। सेवा करके भी आ गए। सतगुरु तो राजी सेवा से होता है। वह कौन सी सेवा हैं? जो सतगुरु की संगत की सेवा है।

मोहे प्यारा लागे री जो मेरे प्रीतम से प्यार करे।

वह सबसे बड़ा सेवक माना जाता है जो संगत की सेवा करता है। मुझे ऐसी बात याद है। धन्य हो ! उन्होंने कहा–जो मेरी संगत की सेवा करता है। मैं उससे खुश होता हूं और सबसे बड़ी हमारी

सेवा यही है। अब एक बात और भी बताऊंगा कि संगत की सेवा क्या होती है? एक तो कह दे कि मैं तो हलुवा बनाऊंगा। एक कहता है कि बुहारी झाड़ी करूंगा। सेवा तो सबसे बड़ी वही है जो गुरु के हुक्म में ड्यूटी जाता है। उसमें कोई भी सेवा हो।

मैं एक बार दिल्ली गया था। पूषा रोड़ पर सत्संग हुआ करता था। वहां बाबा चरण सिंह महाराज भी आया करते थे। उनका और मेरा साथ भी था। वे मेरे से पांच–चार वर्ष बड़े थे। वे गद्दी पर बैठे तब का मुझे पता है क्योंकि उनके पास मेरा आना जाना पहले से ही था। एक लड़की जो हमारे यहां भिवानी की थी, वह वहां पर सेवा कर रही थी। भाई रतीराम भी उसको जानता है। और भी कोई सत्संगी उसको जानते होंगे। उसका नाम शांति था। वे पैसों वाले आदमी थे। वह टट्टी खाना साफ करने की सेवा कर रही थी। हम भी वहीं पर थे। हमने कहा–ये शांति के भाग हैं कि इतनी अच्छी सेवा मिली है। इतने में ही एक लड़की आई और उसने कहा–भंगिन ! ठहर जा जरा, मैं आती हूं। मुझे छींटें न मार देना। मैंने कहा–शांति यह क्या कहती है? शांति ने कहा–बहन जी ! मालिक आपका वचन पूरा कर दे, तो अच्छा है। वह कौन सा वचन है? कि मैं उस सतगुरु की भंगिन अगर बन जाऊं तो मेरा जीवन ही सफल हो जाएगा। समझते हो वह यही कहती थी कि सतगुरु की भंगिन बनना ही मेरे बड़े भाग की बात है। सेवा करना तो बड़े भाग की बात है। उसने यही कहा कि मैं अपना बड़ा भाग समझूंगी कि मैं सतगुरु की भंगिन बन जाऊं। वह सफाई करके आ गई। उस वक्त थोड़े ही आदमी आया करते थे। मेरी भी वहां आटा गूंथने की सेवा की हुई है।

वह आकर सत्संग में बैठ गई और वह उसी लड़की के पास आकर बैठ गई जो यह कह रही थी कि भंगिन ठहर। उसने कहा–तू कौन है? शांति ने बता दिया। शांति की लड़की दिल्ली

में ब्याही थी। उसने पूछा–क्या तू उसकी मां है। शांति ने कहा–हां, मैं उसकी मां हूं? उसने कहा–अरी तू तो बड़ी भाग्यवान और धन वाली है। शांति ने कहा–यह तो गुरु की दया है। उन्हीं का वचन है। उसने कहा–बहन जी ! माफ करना। मैंने तो आपको भंगिन कह दिया। शांति ने कहा–मुझे भी माफ करना और सतगुरु की भंगिन ही बना देना।

वे बातें मुझे याद हैं। जब सतगुरु के हुक्म से सेवा करता है वह तिर जाता है और दूसरा घाट ही कौन सा है? यह तिरने का घाट है। सेवा बड़ी ऊंची चीज है। सेवादार को तो सेवा मिल जाती है। कल मैंने आपको यह बात बताई थी कि उनके नाम लेने से ही कोटि जन्मों के पाप कट जाते हैं। मैं आपको थोड़ी बातें बताता हूं। सत्संग नहीं कराता। गुरुमुखों की बातें बताता हूं। गुरुमुख का तो नाम लेने से ही कोटि जन्मों के पाप कट जाते हैं। महाराज पदम साहब, स्वामी जी महाराज के शिष्य थे। वे डी आई जी थे। उनके दर्शन करते ही उन्होंने अपनी नौकरी छोड़ दी। उन्होंने महाराज सालिगराम की बातें लिखी है कि मेरे भाई सालिगराम के जिसने दर्शन कर लिए उनके कोटि जन्मों के पाप कट गए। जिन्होंने सालिगराम से बातें कर लीं। उनके खानदान के ही कोटि जन्मों के पाप कट गए। इस तरह की बातें उन्होंने लिखी हैं। क्योंकि वे गुरुमुख थे। गुरुमुख तो चाहे सो कह सकता है। गुरुमुख की तो महिमा कही ही नहीं जा सकती। वह अपना काम नहीं समझता बल्कि सतगुरु का ही काम समझ कर करता है। अपना काम समझ कर तो तुम दो दिन भी नहीं कर सकते हो। आप को नींद आ जाएगी। बीमार हो जाओगे। अपना काम समझ कर घर में करोगे तो तुम लड़ाई कर लोगे। कह दोगे कि मुझे खड़े–खड़े तीन दिन हो गए हैं। पर सतगुरु का काम समझ कर करते हो। राधास्वामी दयाल का काम करते हो, न तुम बीमार होते हो और न ही नींद

आती है। क्योंकि एक चाव होता है। मैं देखता हूं कि यहां भाई राजीव का बड़ा अच्छा काम है। वह सारा काम करता है। चाचा साधु राम है। आप यह न कहना कि आप बार–बार नाम लेते हो। नाम तो मैं सब का ही लेता हूं। पर वह बूढ़ा आदमी है। उसकी कितनी उम्र है फिर भी एक साफा सा बांध कर कितना तेज घूमता ही रहता है। क्या ब्याह शादी में दो दिन बीमार नहीं हो जाए? पर यह ब्याह तो न्यारा ही है। इसमे चाव चढ़ जाता है। आप भी कितने बैठे हो? ऐसे–ऐसे लड़के हैं अपने घर में तो पानी का गिलास भी उठाकर नहीं पीते हैं। उनको नौकर पानी लाकर देते हैं और वे यहां आकर कोई थाली साफ करता है कोई पहरा देता है, कोई ड्यूटी पर खड़ा है। न उनको कोई नींद आती है और न ही उनको किसी तकलीफ या बीमारी का ख्याल आता है। बड़ी खुशी है और आनन्द है, यह प्यार का मार्ग है। प्रेम में नींद भी चली जाती है। प्रेम में बीमारी भी खत्म हो जाती है। आपने सुना है कि-

प्रेम के टेम ना दुनिया में।
प्रेम के नेम ना दुनिया में।
प्रेम के जात न दुनिया में।

अर्थात् प्रेम के सामने ये तीनों ही चीजें खत्म हो जाती हैं। जहां प्रेम होता है वहां ये चीजें नहीं रहती हैं। प्रेम तो प्रेम ही होता है। सो प्रेम से जो सेवा करते हैं वे अपने खानदान का भी उद्धार कर लेते हैं। प्रेम बड़ी चीज है। मैं तो यही बात कहना चाहता था कि सेवादार वही हैं जो प्रेम से सेवा करते हैं। उनको मालिक फिर चौरासी के नर्कों का दुख न दें। मालिक उनका उद्धार कर दे। पर ये बात भी कहता हूं कि जिनसे सेवा की पूरी ड्यूटी नहीं दी जा सकती तो उद्धार उनका भी होगा। उन्हें कह देना चाहिए कि हम टाइम पर पहुंच नहीं सकते हैं। ताकि और किसी का नाम लिख

लिया जाए। उनके भरोसे पर रह जाते हैं। दूसरा सेवादार भी खड़ा नहीं करते हैं। दिक्कत आ जाती है। उन भाई–बहनों ने बात बताई जो भंडारे में लंगर की सेवा करते हैं। कोई नहान घर है वहां सेवा करते हैं इनकी सेवा से ही उनका उद्धार हो जाएगा। बाबा सावण सिंह ने और हजूर महाराज ने सेवा ही तो की थी। सेवा करने वाले का भजन बन जाता है।

मैं मिसाल दूंगा आप के सामने। पहले मिसाल तो स्वामी जी महाराज की ही है कि स्वामी जी महाराज ! ये कहते थे कि सालिगराम! आप ध्यान में मत बैठा करो। आपके लिए मैंने बड़ा भारी धन इकट्ठा किया है। बच्चे को क्या मांगना आता है। वह तो गेंद, बल्ला ही मांगता है। अब तेरा मेरा तो जोड़ा है यह कई जन्मों का साथ है। किसी ने पूछा था- शिवदयाल सिंह जी! आपका जो चेला है, यह आपका गुरु है या आप इसके गुरु हो? पीपल मंडी से ये दोनों ही गुजर रहे थे। स्वामी जी ने कहा–इस बात का पता आपको नहीं है। यह तो मुझे ही पता है कि कौन गुरु है और कौन चेला। आप इन बातों को क्या पूछोगे! यह तो मेरा कई युगों का साथी है। फिर किसी ने पूछ लिया कि यह समाधि कब पूरी होगी? आपने नक्शा तो बना दिया। समाध बननी तो दूसरी और तीसरी बादशाही पर शुरू हुई है। शायद साहेब जी ने शुरू की थी। तो उसने पूछा कि यह समाधि कब पूरी होगी? स्वामी जी ने कहा–हम कई बार आ चुके हैं, एक बार भाई–भाई के नाते आए थे। अब गुरु चेले के नाते आए हैं और आगे हम पिता–पुत्र के नाते में आएंगे। तब हम ही राज करेंगे और हम ही सत्संग करेंगे। उस वक्त यह समाधि पूरी हो जाएगी। ऐसी समाधि न तो आज तक बनी है और न ही आगे बनने की उम्मीद है। हजूर महाराज जैसा गुरुमुख न बना है और न बनने की उम्मीद है।

सो उन्होंने कहा "तू क्यों भजन करता है? सालिगराम तेरे

लिए तो मैं आप भजन करता हूं। तू तो सेवा करने के लिए ही आया है।" उन्होंने बेहद सेवा की उस सेवा पर तो काफी लोग तान कसते हैं कि ये थूकचटे हैं राधास्वामी मत वाले थूकचटे हैं। इनकी वाणी में ये लिखा है-

पीक दान ले पीक करावै।
फिर पीक को आप ही पी जावै।।

उन काफिरों ने अपने शास्त्र नहीं देखे, जो राधास्वामी मत की निंदा करते हैं। उनकी वाणियों में भी ऐसा लिखा है कि जो मुख से थूक निकलता है, पवित्र है और एक अमत है, उसका छींटा यदि लग जाता है तो पवित्र हो जाता है। तो क्या संतों का थूक भी कभी अपवित्र होता है? फिर यह तो प्रेम व भक्ति भाव में आकर लिया था वह सतगुरु का प्यार था। मेरे गुरु ने तो कभी भी नहीं कहा कि झूठा खाओ। नहीं कभी भी नहीं कहा। पर यह तो सालिगराम का प्यार था अपने गुरु के प्रति। न तो इतना प्यार किसी ने किया है और न ही कर सकता है।

यह राधास्वामी दयाल की बड़ी दया थी। मैं कितने संतों की बातें आपको बताऊं? सभी ने ऐसा प्यार किया है। उन्होंने जाति कौम और मजहब नहीं देखा। उन्होंने बड़ा भारी प्यार किया। उनका तो प्यार ही अलहदा था। आप पीसते थे, खुद ही रोटी बनाते थे। आप ही पानी लाया करते थे। नहलाया करते थे। चौंकी पर बिठा कर हुक्का भर कर दिया करते थे। लोग कहते हैं कि हुक्का पीया करते थे। तो ये क्या पता कि वे हुक्का पीया करते थे कि नहीं? आप लोग बैठे हो और सुबह उनका जिक्र चल गया है तभी यह बताया है। बाबा जैमल सिंह सरदार थे, वे तम्बाकू कूट कर लाया करते थे। बताओ, अब उनकी गुरुमुखता का वर्णन कैसे करके बताऊं आपको? इतनी भारी सेवा की थी उन्होंने।

एक दिन उनके दिल में ख्याल था गया कि बाबा जी तो मोने

हैं। अगर ये गुरु नानक जैसे होते तो इनकी मैं बड़ी भारी सेवा करता। स्वामी जी महाराज ने कहा कि जैमल सिंह! कल तुम मुझे स्नान करवाना। वक्त से आ जाना और दही ले आना। जैमल सिंह ने पूछा–अजी ! दही क्यों? उन्होंने कहा–मैंने अपने केश धोने हैं। अब महाराज जैमल सिंह ने सोचा कि केश ! इनके तो दाढ़ी भी नहीं है दही का क्या करेंगे ये? वहव दही तो ले आए और जब गुसलखाने में दाखिल हुवे तो कहते हैं कि स्वामी जी ने गुरु नानक साहब के रूप में उनको दर्शन दे दिए। उन्होंने कहा–तेरी यही ख्वाहिश ही थी कि गुरु नानक साहब के रूप में होते। अब तू अगर केश धोना चाहते है तो मेरे केश और मेरी इस दाढ़ी को धो ले। बाबा जैमल सिंह ने उनके पांव पकड़ लिए। उन्होंने कहा–महाराज जी ! आज मेरा सारा भ्रम दूर हो गया है। स्वामी जी ने कहा–बस भाई, संत मोना और सरदार ये तुम्हारा ख्याल ही होता है। संत की गति को तो कोई भी नहीं जान सकता है।

संत की गति जानै न कोई। सन्त की गति गोई।

संत की गति को कौन जाने? संत के पास रहने से भी पूरी तरह से नहीं जान सकते। वे भी खाली रह जाते हैं बेचारे। संतों की महिमा बताता हूं। गुरुमुख तो गुरुमुख ही होता है। अब वही बातें आती हैं। बाबा सावण सिंह महाराज एक दिन समाधि में बैठे हुवे थे। जैमल सिंह जी महाराज ने कहा–सांवण ! तू ध्यान में मत बैठना। तू बैठता है तो मेरा दिल दुखता है। तेरे लिए मैंने बहुत ध ान इकट्ठा किया है। आप बताओ। मैं इन गुरुमुखों की कितनी बातें बताऊं? इनके लिए सतगुरु चाहे सो करके जाते हैं और फकीर चन्द महाराज की भी एक बात याद आती है। वह शब्द मुझे याद है थोड़ा सा कि किस तरह से फकीर चन्द महाराज के गुरु महर्षि शिवव्रतलाल जी जो मेरे भी दादा गुरु थे वे गुरु महाराज के गुरु थे। वे पूर्ण पुरुष थे। कलम के बड़े धनी भी थे और करणी के ध

ानी भी थे। जैनी साधु उनको कहते हैं कि वे तो हमारे जैन मत के आए थे। उनका पार्श्वनाथ या क्या उनके अवतार थे। उन्होंने जैनियों का बड़ा अच्छा ग्रंथ लिखा है। सनातनी कहते हैं कि वे वेद–व्यास के अवतार थे। संत मत वाले कबीर पंथी कहते हैं कि वे तो कबीर के अवतार थे। क्योंकि कबीर की वाणियां बड़ी भारी लिखी हैं। जहां भी जिसमें जाते थे उन्हें अपना ही बना लेते थे। कैसे बनाते थे? उन्होंने किसी का खण्डन नहीं किया। सभी का मंडन किया। फकीर चन्द जी महाराज ध्यान में बैठते थे तो कहते थे-

फकीर मैं तेरे दर्शन का प्यासा।
हाए, फकीर मैं तेरे दर्शन का प्यासा।।
तू तो रहता ज्ञान ध्यान में,
मैं रहता चित्त उदासा।
फकीर मैं तेरे दर्शन का प्यासा।।
आजा प्यारे, सत्संग की शोभा बढ़ा जा।

गुरु अपने शिष्य से कहता है–

मत कर मोहे उदासा।
फकीर मैं तेरे दर्शन का प्यासा।।

अब बताइए आप को क्या कहूं। सतगुरु की महिमा अलग ही होती है। मेरे गुरु महाराज के भी तीन चार शब्द आपने सुने होंगे। वे कहते हैं-

तू तारा, तारा, तू मेरे नैनन का है तारा।

मैं तो इन बातों को समझा नहीं था। वे क्या कहते थे और क्या नहीं कहते थे? अब वे बातें याद आती हैं तो मैं भी सोचता हूं कि मैं भी चूक गया। मैंने अपने सतगुरु को जिस भाव से जानना चाहा था वैसे नहीं जाना। सत्संगियो ! वह दिन तुम्हारे अंदर भी आएगा। ऐसा आदमी तुम्हें नहीं मिलेगा। जो तुम्हारे आगे–आगे घाघरी पहन कर नाचता रहे। समझते हो। उस दिन तुम भी इसी

तरह से रोओगे जैसे मैं रोता हूं। मैंने अपने गुरु को नहीं पहचाना। वही दिन तुम्हारा भी आएगा जिस दिन ये कहोगे कि हम चूक गए और हम भूल गए। हमें पता नहीं था। वक्त चला जाता है। फिर इंसान को रोना पड़ता है। सतगुरु कभी भी आकर नहीं कहता है कि मैं सतगुरु हूं। बाबा सावण सिंह कहा करते थे कि मैं तुम्हारा भाई हूं। मेरे गुरु महाराज कहा करते थे-भाई! मैं तो तुम्हारी ड्यूटी बजाने के लिए आया हूं। कबीर साहब का भी बार–बार यही कहना था। गरीब दास जी भी ये कहा करते थे कि मैं खाना बदोश हूं। मैं बांदी का जाम, गुलाम और खानाबदोश हूं। संत कभी भी नहीं कहते है कि मैं संत हूं, या मैं सतगुरु हूं। वह तो यही कहते हैं कि मैं तो आप लोगों की ड्यूटी बजाने के लिए आया हूं। जब वे चले जाते हैं तो फिर पता लगता है कि वे क्या थे और क्या नहीं थे। संत सतगुरु धुर दरगाह से आते हैं। दुनिया रचने के लिए नहीं वे तो जीवों को लेने के लिए आते हैं। जीवों को लेकर चले जाते हैं। कोई जीवों को लेने आता है। कोई रखवाली करने के लिए आता है। कोई किसी तरह आता है। अपनी–अपनी ड्यूटी बजाकर चले जाते हैं। तुम बड़े भागी हो जो दरबार की आठ दिन सेवा करते हैं।

सो प्रेमियो, सत्संगियो! वाणी तो इन्होंने चार कही। पहली वाणी घीसा साहब की थी। घीसा साहब ने कहा-

संतों म्हारी बात है गहरी।
न हमारा कोई मित्र है न हमारा कोई बैरी।

अब इस एक ही वाणी में सब कुछ खुल जाता है। संतों का न तो कोई मित्र है और न कोई बैरी है। यही बात सब से गहरी है। इस बात को अगर समझ लेते हो तो फिर पीछे कुछ भी बाकी नहीं रहता है। सारा ही काम पूरा बन जाता है। उसका कोई मित्र भी नही है और बैरी भी नहीं है। तो फिर वह क्या करेगा? और

संसार में किससे प्यार करेगा? वह तो उसी से प्यार करेगा जिस घर से हम निकल कर आए थे। जिस घर से हमारा सारा जीवन बना उसी में वापिस जाने की कोशिश करेगा। वह राधास्वामी घर है। वह राधास्वामी धाम है। वह शब्द है उसी में वापिस चला जाता है। सो संतों का न तो कोई मीत है और न कोई बैरी है। आपने ये बातें और भी कई बार सुनी होंगी? कितनी ही बातें होती हैं। उनका कौन मित्र है व कौन बैरी है? वे बैरी को भी आशीर्वाद देते हैं तो मित्र को भी आर्शीवाद देते हैं। वे बैरी का भी उद्धार करते हैं और मित्र का भी उद्धार करते है। उनके तो दोनों ही मित्र हैं। आपे शब्द सुना होगा। ये गाया करते थे-

जिंदक नेड़े राखिये, निंदक मत ना जा दूर।
जैसे बिष्टा गांव का, साफ करत है सूर।।
निंदक मेरा मत मरो जीओ आदि जुगादि।
हम तो ये पद पाइया, निंदक के प्रताप।।

निंदक की महिमा बड़ी भारी है। संत कहते हैं कि मेरा निंदक कभी भी न मरे। अगर उनके दिल में विरोध होता तो वे अपने निंदक को श्राप देते। बुरा बोलते और कुछ कहते। नहीं, वे तो कहते हैं कि ये बेचारा चेताने के लिए आया है अपने मित्र को।

मेरे महाराज जी एक मिसाल दिया करते थे। एक बाबा जी के दो चार चेले थे। कुछ और आदमी उस बाबा जी को अनाप–शनाप बोलते थे। वह बाबा जी उनको अपने चेलों से ज्यादा प्रसाद दिया करते थे। अब वे सोचने लगे कि बाबा जी अपनी इतनी मेर करता है और हम इसकी निंदा करते हैं। सो हम तो जुल्मी है। हम इनकी कभी निंदा नहीं करेंगे। उन्होंने निंदा न करने का नेम कर लिया कि कभी भी बाबाजी की बुराई नहीं करेंगे। दूसरे दिन जब वे निंदक महात्मा जी के पास गए तो जो महात्मा जी के पास रहते थे, उन्हीं की तरह थोड़ा–थोड़ा प्रसाद दिया। उन्होंने कहा–बाबा

जी ! बात क्या है? जब हम आपकी बुराई करते थे उस वक्त तो आप ज्यादा प्रसाद दिया करते थे और अब तो हमने आपकी बुराई न करने का नेम लिया है आज आप ने इन औरों के बराबर थोड़ा–थोड़ा प्रसाद दिया। महात्मा जी ने कहा–हां भाई ! यही होता है। उन्होंने कहा–क्यों? महात्मा जी ने कहा–कमाऊ पूत सब को प्यारा लगता है। आप मेरे कमाऊ नहीं रहे। इन्हीं जैसे हो गए। आप समझते हो कि जो निंदा करते हैं उनको संत कमाऊ कहते हैं। मोहम्मद साहब कहते हैं कि अगर मैं निंदा करूं तो मैं अपनी मां की ही कर लूं तो अच्छा है क्योंकि मेरी मां के पाप तो कट जाएंगे। सो निंदा करो तो अपनी करो और बड़ाई करो तो सतगुरु की करो।

सो निंदा तो एक गंदा, कुरड़ी का कूड़ा होता है। उससे बच कर रहो। दूसरों की निंदा करके खुद गंदे हो जाओगे। कभी भी तुम्हारे विचार पवित्र ही नहीं होंगे। गंदगी तुम्हें आखिर तक कष्ट देती रहेगी। सो निंदा करनी बड़ी बुरी चीज है। महात्मा ने कहा–आपको अब ज्यादा प्रसाद नहीं मिलेगा। क्योंकि तुम अब मेरे कमाऊ पूत नहीं रहे। आप पहले कमाऊं थे। अब तो तुम इनके ही बराबर हो गए। अब आप मौज करो। सो महात्मा किसी से विरोध नहीं करते हैं। जो उनको घटिया बोलता है उनको भी कहते हैं कि आइए, बैठिए। प्यार करते हैं। क्योंकि वे जानते हैं कि इनके दोनों के अंदर परमात्मा है। एक के ऊपर पर्दे पड़े हुए हैं। जो सतगुरु को पहचान लेता है उसके पर्दे उतर जाते हैं। ये पर्दे तीनों युगों से पड़ते आ रहे हैं। ये परदे मल–विक्षेप और आवरण के हैं। उन पर्दों को दूर करने के लिए मौन सा यत्न है। वह एक नाम ही है। वह बड़ी ऊंची दौलत है। नाम से कोटि जन्मों के पाप कट जाते हैं। मैं तीन महात्माओं की बातें बताऊंगा। एक कहता है-

राम नाम के लेत ही होत पाप का नाश।
ज्यों चिंगारी आग की, पड़े पुरानी घास।।

ये तुलसी साहब ने कहा है। हजारों मन घास के ढ़ेर पर अगर छोटी सी चिंगारी आग की पड़ जाती है तो उसे स्वाह कर देती है। इतना भारी राम का नाम है। वह राम कौन था?

राम-राम तो सभी कहैं ठग, ठाकुर और चोर।

मैने शाम को यह बात बताई थी कि दीवारों को फांदने वाले भी राम को याद करते हैं–

राम-राम सब कहैं ठग, ठाकुर और चोर।
बिना प्रेम रीझै नहीं, तुलसी, नंद किशोर।।

वह नंद किशोर बिना प्रम के खुश नहीं होता है। इसीलिए सभी नाम लेते हैं। पर प्रेम से जो नाम लेते हैं उन्हीं का बेड़ा पार होता है। जब वह नाम रती भर भी प्रगट हो जाता है तो करोड़ों मन पापों को स्वाह कर देता है। खत्म कर देता है। इतना बताते हैं। चरण दास जी अपने भक्ति सागर में लिखते हैं–

नारी हत्या, बालक हत्या, ब्रह्म हत्या जो होय।
एक बार मुख से नाम निकसे, सब पातक डारै धोय।।

न्यारी–न्यारी बातें बताई है कि नाम में बड़ी भारी शक्ति है। उस नाम की महिमा कौन जानता है? उस नाम की महिमा तो वही जानता है जो उस नामी से मिला हुआ है। उसको कोई सतगुरु पूरा कोई मिल गया और भेद बता दिया। हम, सच पूछा जाए तो गुरुओं के नजदीक ही नहीं जाते हैं। जब तक सतगुरु सिर हाथ नहीं रखता है, तब जीव का उद्धार हो नहीं सकता। ये मुझे जंची हुई बातें हैं। सतगुरु जिसको स्पर्श करता है, उसको सारी जायदाद संभलवा देता है। तो सतगुरु किसको स्पर्श नहीं करता है। सतगुरु सब से प्यार करता है। सभी पर हाथ रखता है। अगर कोई कहे कि इतनी संगत बैठी है हम किस तरह से रखवाएं। अब इतने बैठे

हुए हैं, जिसने भी नाम लिया है कौन उनमें आभागा है जिसके सिर पर हाथ नहीं रखा है। कल ही तुम बता रहे थे कि १८ लाख से ज्यादा संगत हो गई है। फिर भी ऐसा कौन है जिसके सिर पर हाथ नहीं रखा गया हो? अगर किसी पर हाथ नहीं रखा गया है तो उस जैसा निर्भाग भी कोई नहीं है। क्योंकि संत सतगुरु तो हाथ रखे बिना किसी को छोड़ते ही नहीं है और उसके हाथ में ही उसकी शक्ति होती है। उसके सारे कर्म कट जाते हैं। अपनी–अपनी बातों को तो सब ही बड़ा कहते हैं पर संत सतगुरु की बातें लेकर चलो तब पता चलता है। कबीर साहब ने भी यही कहा है–

गुरु धरा शीष पर हाथ।

बाबा सावण सिंह भी यही कहते हैं कि **कोटि जन्मों के दुख दूर हो जाते हैं, जब सतगुरु हाथ रखता है। जब तक वह हाथ नहीं रखता है तब तक तो उसका बाप भी नहीं उतार सकता है। मैं नेपाल गया था। मेरे पास बड़े-बड़े पापी आए। उनके सभी के सिर पर हाथ रख कर सभी पवित्र कर दिए। सभी मांसाहारी जीव थे, सभी सत्संगी बन गए। उन्होंने सभी खोटे कर्म छोड़ दिए।** 'सारी दुनिया' रिसाला निकलता था, वह रिसाला मेरे पास में है। इसीलिए मैं बताता हूं। उनकी महिमा बताता हूं। हजूर महाराज कहते हैं–

गुरु धरा शीष पर हाथ, मन क्यों सोच करै।

सो तू डरता ही क्यों है कि जब तुझ को गुरु ने संभाल लिया है। गुरु की बड़ी अपार दया होती है।

ऐ प्रेमियो, सत्संगियो! मैं यही बात आपको बताना चाहता हूं कि आप अपना जीवन पवित्र रखना चाहते हो तो गुरु को पल–पल याद करते रहो। एक घीसा साहब की वाणी है- **साधो, तुम्हारा मान है बैरी।** आखरी में यह कहा है कि हम मान बड़ाई में फंस जाते हैं–

मान बड़ाई गर्व ईर्ष्या सुगरा हो सो त्यागै।
बिन त्यागे हरि ना मिलै, पाप काया के दूणा लागै।।

मान बड़ाई ईर्ष्या को तो सुगरा आदमी ही त्यागता है। जिसने अपने गुरु की शरण ले ली है वही इनको त्यागता है। कई–कई तो बड़ा भारी अहंकार करते हैं। अपनी ड्यूटी का भी अहंकार करते हैं।

ऐ सत्संगियो! ड्यूटी का अहंकार न करना। बस यही ख्याल करना कि मेरे बड़े ऊंचे भाग थे कि सतगुरु ने हमें ये ड्यूटी दी। हम बड़े भागी हैं और सतगुरु की यह ड्यूटी पूरी निभ जाए। अगर आप ये सोचते हो कि आप इतने ऊंचे बैठे हो, कल या परसो मैंने ये बात कही थी कि नहीं? मैं आप सभी के चरणों में ही हूं। यह तो मेरे गुरु महाराज की दया थी। मेरे कर्म ही ऐसे थे और ये ड्यूटी भी ऐसी ही है। इसमें बस एक ही सुख है कि मैं अपने गुरु का हुक्म बजा रहा हूं। बस। यही बात मैंने आपको भी बताई है। घीसा साहब कहते हैं-

न हमारा कोई मित्र है न हमारा कोय बैरी।

संतों का न तो कोई मित्र होता है और न बैरी होता है। सारे एक जैसे ही होते हैं। दूसरा शब्द इनका था, इस शब्द को कई बार मैं भी गाया करता था। आज भी जब शब्द गा रहे थे सोच रहा था। बाद में घीसा साहब का शब्द आया था। वह इस तरह से था कि–

घीसा साहब गरीब ने एक शब्द विचारा।

उस शब्द का ख्याल मुझे आया हुआ था। मैंने सोचा कि ये दोनों शब्द बता कर आ। एक शब्द तो पहले गा दिया था-

रांडी ढांडी नाह तो शब्द तेरा। दोनों ही शब्द सुनाऊंगा। पर ये दोनों ही शब्द पहले गा दिए। क्योंकि इन्होंने तो यही सोचा कि ये शब्द पहले ही गा लो। देखते हैं कि महाराज जी फिर कौन

सा शब्द गाएंगे। मैं इनको गाया करता हूं। सो ये बेचारे भी क्या करते हैं? दूसरा शब्द कबीर साहब का जो पीछे गाया–

हथनी तो कूएं में ब्याई, मछली वक्ष चढ़ी।
सागर में पनिहारी डूबी, कर्मों की रेख अड़ी।।
शब्द तेरी बिरले को परख पड़ी।

शब्द–शब्द तो सारी दुनिया ही कहती है। कहा भी जाता है।

शब्द-शब्द तो सब कोई कहै, वह तो शब्द विदेह।
जिव्हा पर आवै नहीं निरख परख कर लेय।।

तो क्या कहते हैं कि शब्द तेरी बिरले को ही परख पड़ी। वह बिरला कौन है? कि उसकी जिसको परख पड़ी, जिसने समझ लिया कि–

हथनी तो कूंए मैं ब्याई मछली वक्ष चढ़ी।

वह हथनी क्या है और मछली क्या है? सोचा जब ये सुरत नीचे रहती है, छठे चक्कर से नीचे तो ये हथनी की तरह से रहती है और वह घूमती रहती है। यह मछली का रूप धारण कर लेती है तब ये ऊपर चढ़ जाती है, किसका सहारा लेकर चढ़ती है? जैसे मछली पानी की धार के २०–२० कौस ऊपर चली जाती है। आपने देखा है वर्षा में, कई बार मछली और मेंढ़क बरसते हैं। वे मछली पानी के साथ ऊपर चढ़ जाती हैं। सुरत और मछली का एक ही रूप है। सुरत भी उलटी धार पर चढ़ती है मछली भी उल्टी धार पर चढ़ती है। ऊपर से पानी पड़ता है चाहे वह २० योजन ऊपर से पड़ता हो, मछली पानी के साथ–साथ ऊपर चली जाएगी। पहाड़ों के ऊपर में। सो वह हमारी सुरत ही मछली है। ये नीचे बिखरी हुई थी। फिर यह उलटी मोड़कर छठे चक्कर से ऊपर शब्द की डोर को पकड़ा करके चढ़ाई जाती है। जैसे मकड़ी अपने ही मुंह में से तार निकाल कर ऊपर चली जाती है। सीधी तार के सहारे और वह तार भी उसी के मुंह में से निकलता है।

इसी तरह सुरत भी अपने अंतर में शब्द को पकड़ कर चढ़ जाती है। यही शब्द कबीर साहब का था। दूसरा शब्द एक और भी गाया था–

चुग हंसा मोती मान सरोवर ताल।

कोई आज्ञाराम महात्मा हुऐ हैं यह उनका शब्द है। यह भी वही बात है कि **चुग हंसा मोती, मान सरोवर ताल।** वह मानसरोवर ताल है जहां पर अगर हम पहुंच जाते हैं तो देखेंगे कि वहां पर हंस मोती चुगता है। पर अगर तुम उन मोतियों को ठीक रखते हो, कामयाब रखते हो तभी वह हंस मोती चुगता है। नहीं तो वह वह कौवे की तरह बिष्टे में ही चोंच मारेगा। जिसे मान सरोवर कहते हैं वह मानसरोवर क्या है? उस मान सरोवर में मोती पैदा होते हैं। वे मोती किस वस्तु के हैं? वे सदाचार के मोती हैं। जो सदाचारी है वही उस मानसरोवर तक पहुंचता है। काफी लोग तो उसको मानसरोवर कहते हैं। कई उसको अमतसर का तालाब कहते हैं। कई उसे कुछ और कहते हैं और हम उसको दसवां द्वारा भी कह देते हैं। या उसको सीधे संग, स्थान कहते हैं। आप इसे समझते होंगे और उस स्थान पर मान सरोवर है। ये बातें मैंने कई बार कही हैं कि कइयों के मान सरोवर खाली हो जाते हैं। वे बेचारे कैसे मोती चुगते? जब तालाब ही खाली है तो मोती कहां पैदा होंगे? आप ने सुना होगा कि जब समुद्र भर जाता है तभी मोती बनते हैं। सो उस समुद्र का ख्याल रखा करो। जिनका वह समुद्र भरा हुआ है उनकी सुरत वहां मोती चुगती है। वहां नाम रूपी मोती होते हैं। पर जिसका समुद्र ही सूखा पड़ा है, तो वहां कोई कैसे मोती चुगेगा? वहां तो वे पहुंच ही नहीं सकते हैं। उनका हंस वहां पहुंच ही नहीं सकता है। हंस कौन है? हंस तो तुम्हारा जीव है। सुरत है और यही कहते हैं कि उस स्थान पर जीव–जीवात्मा मोती चुगती है। वहां तो वही जा सकता है जिनका मान सरोवर भरा है या यूं

कहो कि जो अपने सदाचार का ख्याल रखते हैं। स्त्री हो चाहे पुरुष हो 60 वर्ष का हो चाहे आठ वर्ष का हो। जब तक हमारा सदाचार नहीं बनेगा या ब्रह्मचर्य का पालन नहीं होगा। तब तक उस मानसरोवर के ताल में उसका बाप भी मोती नहीं चुगा सकता। मैं आपको सीधी बातें बताता हूं। अगर जिनका मान सरोवर विषय–विकारों में सूख जाता है उनकी हालत भी आपने देखी है कितनी बुरी हो जाती है? वे त्राहि–त्राहि करके मर जाते तो नाम भी नहीं जपा जाता है। वे नाम को भी भूल जाते हैं। आप लोगों ने देखे होंगे? आप भी अपनी छाती पर हाथ रखकर देखो। आप भी तो कई–कई बार उस नाम को भूल जाते हो। क्योंकि ध्यान कभी तो अपने पुत्रों में चला जाता है। कभी उनका ख्याल धी जंवाइयों में चला जाता है। कभी जायदाद में चला जाता है। कभी विषय विकारों में चला जाता है। कभी कहीं और कभी कहीं ख्याल चला जाता है। इसीलिए तो कबीर साहब ने कहा है–

कबीर मन एक है, भावैं जहां लगाय।
भावैं हरि की भक्ति कर, भावैं विषय कमाय।।

सो आप अपने मन को किसी भी तरफ लगा दो। उस मान सरोवर में लगाना है तो सतगुरु के हुकम पर जुट कर विषय–विकारों को त्याग कर अपना जीवन पवित्र बनाने के लिए काम करो। उस मान सरोवर में पहुंच जाओगे। अगर मान सरोवर पहुंच गए तो तुम्हारी आधी भक्ति हो जाएगी और मोती चुगने का अर्थ यही है कि वह मानसरोवर ताल भरा हुआ है और हमारी सुरत जीवात्मा हमारे प्राण वहां पहुंच जाते हैं। बड़ी शांति मिलती है उस समुद्र को देखकर ही। जिनका वह समुन्द्र खाली हो जाता है या निकल जाता है उसको तो बेहद परेशानी होती है। वे रोते हैं और चिल्लाते हैं उस वक्त पर। उनकी बड़ी भारी दशा होती है। भागी वही है जो उस समुद्र को ज्यों का त्यों रखता है। इसी तरह तुमने कबीर की

वाणी भी तो सुनी होगी कि कबीर सभी की चादरें मैली बताता है और फिर कहता है कि कबीर ने तो अपनी चादर ज्यों की त्यों ही रख दी कि जैसी चादर उसको मिली थी वैसी ही चादर उसने वापिस जाकर मालिक को संभलवा दी और कह दिया–इसे ले लो। उस चादर को मैली करने का क्या मतलब है? यही तो मैली करने का मतलब है कि हम विषय–विकारों में उसकी मिट्टी पलीत कर लेते हैं। तब हमारी चादर को दाग लग जाता है। जो चादर हम ओढ़ते हैं यह वह चादर नहीं है। ये शरीर भी चादर नहीं है। तो फिर चादर तो असल में पूछा जाए तो हमारी जीवात्मा ही है। सुरत है। उस सुरत को जहां दाग लग जाता हैं तो यह मैली हो जाती है। उस मैली चादर को न तो कोई ओढ़ने वाला ही होता है और अगर वह किसी के पास जाता है तो वही उससे घणा करने लग जाता है। जिसकी चादर पवित्र है उसको तो सभी जफ्फी बांध ा भरने की कोशिश करते हैं और सभी उसको पकड़ कर तैरना चाहते हैं। आप देखते हो कि सभी महात्माओं की शरण लेते हैं और ऐसे महात्माओं की बंदगी करते हो। उनकी चादर मैली नहीं होती है उनकी तो चादर ही पवित्र है। उनका मान सरोवर ताल भरा हुआ है। सो हम समझते हैं कि अगर उनके मान सरोवर में गोता लग जाए तो हमारा भी उद्धार हो जाएगा। आप कहोगे कि क्या उनके मान सरोवर में हमारा गोता लगेगा? आपने देखा है कि संत कभी तो शीत मीत दे देते हैं और कभी वे सिर सांटे देते हैं।

हम सौदागर आए रे जग तू मतना नाटै।।

सो संतों की दया और मेहर होती है। सो यह वाणी थी आज्ञाराम की। वे कहते हैं कि–

चुग हंसा मोती मान सरोवर ताल।

तीसरी या चौथी वाणी फिर इन्होंने कही, ये कबीर साहब की वाणी थी।

समंद विच मोती है। वो ये बातें तो मैंने पहले ही आज्ञाराम की वाणी में बता दी है। और यही कबीर जी कहते हैं-

संभद विच मोती है। मोती और कहीं भी नहीं हैं। मोती तो समुद्र के बीच में ही हैं। तुम बाहर के इन समुद्रों में जो मोती तलाश करते हो, ये मोती तो मिट्टी है और इन मोतियों में तो हमारा जीवन बिगड़ जाता है। इन मोतियों में अगर फंस गए तो फिर आना पड़ेगा। आपने देखा है कि जिसकी वासना धन में होती है वह सांप बन कर आता है। सहजो बाई ढूंसर कुल में बणिये की बेटी कहती है। वह चरण दास की बहन भी थी और चेली भी थी। वह कहती है कि जिसकी वासना धन में रहती है वह सांप बनकर आता है। जिसकी वासना घर में रहती है वह घूंस बनकर आता है। जिसकी वासना भोगों में रहती है तो वह स्त्री, कुत्ती बनकर चूहड़े के घर में आती है और पुरुष, सुअर बन कर आता है। उसने बहुत ही वासनाओं के बारे में बताया है। जिसकी जहां वासना रहती है उसे वही आना पड़ता है।

इसीलिए तुम अपनी आस सतगुरु में ही रखो। हमने सतगुरु में समाना है और सतगुरु ने शब्द में समाना है। सो चाहना तो एक सतगुरु की ही रखनी चाहिए। उन्हीं की चाहना से हमारा बेड़ा पार हो जाता है। आप ऐसा कहते हो और सतगुरु के दरबार में भी आते हो। यदि बड़ाई समझ कर के करते हो तो उससे भक्ति नहीं बनती है। भक्ति तो दीनता से ही बनती है। मैंने आपको इस जिन्दगी में सेवा बताई है। यह सेवा करते हो इसकी में तुम्हारा बड़ा भला है। एक बार और है। जिन्होंने नाम लिया वे ध्यान में जरूर बैठना है। मैं किसी को धोखा नहीं देता। सेवा दूसरी चीज है। ध्यान सुमरन करना दूसरी चीज है। कई भाई मेरे पास आ जाते हैं। कहते हैं कि हम तो फलां सेवा करते हैं। मैं कहता हू कि सेवा का काम दूसरा है। भजन सुमरन दूसरा काम है। अब आप

कहोगे कि आप तो कह रहे थे कि तुम्हारा कल्याण हो जाएगा। सेवा से तो अंतःकरण पवित्र होता है। दीनता आती है। फिर हमारा भजन भी बन जाता है। हमारा जीवन जल्दी ही सुधर जाता है। हम पवित्र हो जाते हैं और हमारा हंस उस मानसरोवर ताल में मोती चुग लेता है। वे मोती तो तुम्हारे ही पास हैं और तुमने ही चुगने हैं। जिसने अपने मोती चुग लिए उसका जीवन सफल हो गया। मैंने थोड़ी बातें बता दी हैं।

सो प्रेमियो, सत्संगियो ! अगर करो तो तुम्हारी मर्जी और न करो तो तुम्हारी मर्जी। मैं तो सीधा आदमी हूं। सीधी बातें आपको बताई हैं कि यह बहुत कीमती टाइम है और अगर तुम इस टाइम से भी चूक गए तो चूक ही गए। फिर यह मौका नहीं मिलेगा। यह मौका बार–बार न तो मिला है और न ही मिलने वाला है। केवल एक ही बार मिलता है। जैसे काठ की हांडी एक ही बार चढ़ती है। अब एक शब्द और सुना देता हूं।

दोहा-

बाबल भेजी रे बणज को गई रे डगरिया भूल।
कुल ममता में आय के, ब्याज गंवा दिया मूल।।
पांच तंत गुण तीन हैं आगे रे मुक्ति मुकाम।
तहां कबीर घर किया गोरख दत्त न राम।।

महरम हो सोए जाणै भाई साधो, ऐसा है देश हमारा हो जी.।
बेद कतेब पार नहीं पावै, कहन सुनन से न्यारा हो जी...।
जात करम कुल क्रिया नाहीं, नाहीं संध्या नेम अचारा हो जी.।
बिन जल बूंद पड़े जहां भारी, नहीं मीठा नहीं खारा हो जी.।
सुन्न महल में नोबत बाजैं, किंगरी बीन सितारा हो जी...।
बिन बादल जहां बिजली रे चमकैं, बिन सूरज उजियारा हो जी।
बिन नैन जहाँ मोती रे पोवै, बिन सुर शब्द उचारा हो जी।
जो चले जांये ब्रह्म जहाँ दरसै, आगे अगम अपारा हो जी..।

कहै कबीर सुनो भाई साधो, बूझे कोई गुरुमुख प्यारा हो जी।
महरम हो सोए जाणै भाई साधो.....।

यह कबीर साहब जी की वाणी है। वे कुछ महात्माओं से मिले होंगे। यह उस वक्त की वाणी है। कई कहते हैं कि गोरख नाथ और उनका संवाद हुआ था। पर मैं ये बातें नहीं कहता हूं वे कुछ महात्माओं से मिले और उन्हीं से कुछ बातें हुई हैं कि-

महरम हो सो ही जाने भाई साधो, ऐसा देश हमारा।

ऐसे देश को तो केवल महरमी ही जान सकता है। और ये भी बता दिया कि **जो चले जाएं, ब्रह्म जहां दर से।** जो जाएगा तो उसे ब्रह्म के दर्शन होंगे। पर वे ब्रह्म में रूके नहीं। आगे उन्होंने कह दिया कि आगे अगम अपारा हो जी। कि उस ब्रह्म से आगे अगम–अपारा भी है और फिर कहते हैं-

बूझै कोई गुरुमुख प्यारा हो जी।

अर्थात् गुरुमुख तो वही होता है जो आगे की पूछता है और आगे चलने की कोशिश करता है। जो एक जगह रूक गया वह गुरुमुख नहीं है। गुरुमुख तो वही है जो राधास्वामी धाम में पहुंचने की कोशिश करता है और पहुंच जाता है। वह अपने गुरु से, उस शब्द गुरु से जा मिलता है। उस राधास्वामी धाम से ही तो हम आए थे और वहीं हम वापिस चले जाएं। अपने सतगुरु से मिल लिए। बाहर के देहधारी गुरु से ही मिलकर भारी शांति मिल जाती है। अगर वह थोड़ा सा भी दूसरी तरह बोल दे तो रोना पीटना शुरू कर देते हो। मैं नाम नहीं लेता कई ऐसी बहनें आती हैं मेरे पास। अगर कोई काम हो जाए और थोड़ी देर मैं उनसे न बोलूं तो नीचे की तरफ होंठ लटका देती है। मेरे से भी बड़े–बड़े होंठ कर लेती हैं और रोना पीटना शुरू कर देती हैं। देहधारी नहीं बोलता है तभी रोना पीटना शुरू हो जाता है। तो जब तक वह गुरु नहीं मिलता है तब तक शांति नहीं लेनी चाहिए कभी भी। इस गुरु से

उस गुरु को मिलना चाहिए। गुरु गुरु से मिला देता है। सो सारे बंधन कट जाते हैं। सो संत महात्मा न तो किसी का विरोध करते हैं। न किसी का पक्षपात करते हैं वे तो प्रेमी को देखकर काम कर देते हैं।

।। राधास्वामी।।

ध्यानाकर्षण बिन्दू

सभी सत्संगियों को स्मरण कराया जाता है कि प्रत्येक आश्रम से सत्संगियों की दिनोद धाम में सेवा की बारी आती है। अतः आप सभी अपनी-2 शाखा में जाकर अपनी सेवा का समय पूछें और निश्चित समय पर धाम में सेवा तथा दर्शन लाभ उठायें।

सितम्बर/अक्तूबर मास के लिए सेवा कार्यक्रम

1.	गाधली	22 नवम्बर-28 नवम्बर
2.	झरझीला	29 नवम्बर-05 दिसम्बर
3.	नजफगढ़	06 दिसम्बर-12 दिसम्बर
4.	हरसाना	13 दिसम्बर-19 दिसम्बर
5.	सिचावली	20 दिसम्बर-26 दिसम्बर

जीवन दर्शन

जो साधक सन्त महापुरुशों की आज्ञा के अनुसार अपने कर्त्तव्य का पालन करता रहता है, उसको उसकी कृपा से निश्चय ही परमात्मा की प्राप्ति हो जाती है। फिर जो भगवान की आज्ञा के अनुसार भगवान के अनन्य शरण होकर अपने कर्त्तव्य का पालन करता है, उसका कल्याण होने में तो कहना ही क्या है।

कर्मों का चक्र

महर्षि शिवव्रत लाल जी

मनुष्य के कर्मों का चक्र निरन्तर चलता रहता है। जो भी कर्म मनुष्य करता है उनसे आगे के आने वाले जन्मों के लिये संस्कार और प्रारब्ध तैयार होते हैं। अगला जन्म लेने के बाद फिर कर्म बनते हैं और उन कर्मों से और आगे के जन्मों के लिये संस्कार और प्रारब्ध बनते हैं।

कर्म तीन प्रकार के है, क्रियावान, प्रारब्ध और संचित, क्रियावान वह कर्म है, जो इस शरीर में किये जाते हैं और उनके बहुत से हिस्से का फल भी उसी वक्त भोगा जाता है। प्रारब्धा कर्म वह कर्म है जिनके सबब से शरीर मिलता है और अच्छे-बुरे स्थान में जन्म लेता है। संचित वह कर्म है, जो हर एक जन्म में अलग जमा होते रहते हैं और फिर प्रारब्ध कर्मों में मिल जाते हैं। इस प्रकार कर्मों का सिलसिला कभी समाप्त नहीं होता। कर्मों के इस विकराल चक्र से छुटकारा केवल पूरे संत सतगुरु के उपदेश के अनुसार चलने से ही हो सकता है। मनुष्य उस मालिक कुल परम तत्त्व जो सबका आधार है, का विश्वास और श्रद्ध रखते हुए भविष्य में निजी स्वार्थ, मान-सम्मान, धनसम्मति के लिए हेराफेरी न करता हुआ अपने कर्त्तव्य को निभाता रहे। शेष सब काम मालिक कुल सर्वाधाार के सम्पूर्ण करते हुए, इन कर्मों से बच सकते हैं। इसलिये बुद्धि को निर्मल करने के लिए किसी पूर्ण पुरुष का सत्संग परमावश्यक है।

भाग जाग गुरु पूरा पाया, बना आप बढ़ भागी।
प्रेम हाट में सौदा कीना, नहीं बना बैरागी।।

अनमोल वचन

तुम एक तत्त्व वाले पत्थर की मूर्त्तियों को पवित्र और दिव्य मानकर पूजते हो, परन्तु पांच तत्वों वाले नीची जाति का कहकर कई मनुष्य को अपवित्र और नीच गिनते हैं और नफरत करते हो।

– *संत तुलसी साहिब*

राधास्वामी मत सहज योग होने के कारण से केवल सुरत के साथ सम्बन्धा रखता है। जिसकी आनन्दमय कोष से तुलना है। यह दुनिया में सबसे ऊंचा मार्ग है। – *महर्षि शिवव्रतलाल जी*

आज गुरु बनना आसान है, शिष्य बनना कठिन है। बहुत लोग बातें बनाना सीख कर गुरु बन बैठते हैं। गुरु तो बहुत मिल जाते हैं, पर शिष्य तो एक भी नहीं मिलता है। *–हजूर कंवर सिंह जी महाराज*

अपनी स्त्री के सिवाय किसी भी स्त्री को मलिन दृष्टि से देखना काम है और यहीं सिद्धांत स्त्रियों के लिए भी है।

– **संत कबीर साहिब जी**

ज्ञान-सार

जैसे गाय का दूध गाय के लिए नहीं है, प्रत्युत दूसरों के लिये ही है? ऐसे ही भगवान की कृपा भगवान के लिए नहीं है, प्रत्युत दूसरों (हम सभी) के लिए ही है।

जैसे मछली जल के बिना व्याकुल हो जाती है, ऐसे ही हम यदि भगवान के बिना व्याकुल हो जाये तो भगवान के मिलने में देर नहीं लगेगी।

भगवान के विषय में सन्तोष करना और संसार के विषय में असन्तोष करना महान हानिकारक है।

भोगों की प्राप्ति सदा के लिये नहीं होती और सबके लिये नहीं होती। परन्तु परमात्मा की प्राप्ति सदा के लिये होती है और सबके लिये होती है।

कड़वी सच्चाई

श्री स्वामी दयानन्द सरस्वती बड़े महान व्यक्ति थे। वह आर्य समाज के संस्थापक तथा हिन्दू समाज के सुधारक थे। सच्ची बात को स्पष्ट रूप से कहने से न डरते थे। कभी उनकी बाणी कड़वी भी होती थी।

यह कड़वी सच्चाई ही उनकी मृत्यु का कारण बनी। यह महाराजा जोधपुर से मिलने गये। दरबार में क्या देखा कि एक वैश्या महाराजा के बराबर बैठी है। इस भयंकर अपराध को वह बरदास्त न कर सके और बड़े कड़वे शब्दों में महाराज को कहा श्रीमान ! मैं क्या देख रहा हूं। सिंहनी के तख्त पर कुत्तियों का राज?

वैश्या जलकर खाक हो गई और उसने उनके रसोइये से मिलकर उनके भोजन में पीसा हुआ कांच मिलवा दिया।

इस कडुवी सच्चाई के कारण उस महान आत्मा का देहान्त हुआ।

कहते हैं संग दिल की आंख में आंसू नहीं आता।

अगर यह सच है तो दरया क्यों निकलते हैं पहाड़ो से।।

मालिक की मौज की बात, मेरी शादी को १२ वर्ष हो गए थे, तब तक कोई सन्तान नहीं थी। काफी घूमे, फिर काफी डाक्टरों की दवाइयाँ लीं, लेकिन कोई आराम नहीं आया और इसी बीच इधर–उधर स्याणे सेवड़ों के यहाँ जाने से ओपरा रोग भी हो गया था। एक दिन मालिक की जौज हुई। एक बहन हमें दिनोद ले आई। महाराज जी के यहाँ आते ही वही हालत हो गई। महाराज जी ने उसी टाइम दवाई पिलाई और आशीर्वाद दिया और वचन दिया कि जिन्दगी में कभी ऐसी बीमारी नहीं होगी और बच्चे भी होंगे। हम दोबारा दिनोद गए महाराज जी चरण टेकने की अरदास की तो महाराज जी ने वचन दिया कि तुम्हारे लड़का होगा तब चरण टेकेंगे। २१.१२.२००१ को महाराज जी के चरण कमलों से हमारे घर को पवित्र किया और हम सबको आशीर्वाद दिया और लड़के का नाम देवेन्द्र रखा गया और दूसरी घटना भी हुई चार पहले की बात है। मेरी एक दूधी में एक गाँठ हो गई तो महाराज जी से अरदास किया तो महाराज जी ने ब्लड कैंसर का रोग समझकर डाक्टर से न दिखाने के लिए बोल दिया। मालिक का वचन वह गाँठ चार वर्ष वहीं सिमटी रही। चार वर्ष के बाद वह गाँठ अचानक बढ़ गई। मैंने दोबारा आकर महाराज जी से अरदास की तो महाराज जी ने सहज स्वभाव डाक्टर से दिखाने के लिए कहा और ठीक होने का आशीर्वाद दिया। तब डाक्टरों से चैकअप कराया और ऑपरेशन करा दिया। मालिक की दया से उस गाँठ ने रसोली का रूप ले लिया। एक किलो की रसोली निकली। (सतगुरु ने यह कपा की उन्होंने सूली की सूल बना दी यानि कैंसर की

रसोली बना दी) और डाक्टर आपरेशन कर रहे थे तब महाराज जी मेरे पास खड़े होकर आशीर्वाद दे रहे थे, बोल रहे थे, आशीर्वाद है जीजी, घबरा मत ठीक हो जाएगी।

श्रीमती सतरूपा देवी पत्नी श्री मुकेश कुमार
गांव खेड़ी खुम्भार, जिला झज्जर (हरियाणा)

नोट :-जिस किसी सत्संगी भाई के साथ इस प्रकार सतगुरु दया की घटना घटी हो तो प्रमाण सहित दिनोद धाम में भाई बलबीर सिंह को दे सकते हैं।

स्त्री का कर्त्तव्य — कहानी

स्त्री का कर्त्तव्य है कि वह ससुराल में अपनी सास और जेठानी आदि को जन्म देने वाली मां से भी बढ़कर समझे। यदि सेवा के द्वारा इनको प्रसन्न कर लूंगी तो भगवान प्रसन्न होंगे।

बहुओं का कर्त्तव्य है कि वे सास को मां से भी बढ़कर समझें और उनकी आज्ञा का पालन करें। माता की बात किसी समय न भी मानी जाये तो भी कोई हानि है, किन्तु सास की बात न मानने से उनको विशेष दुख होता है। जैसे भगवान का भक्त बड़ी सावधानी से ऐसी चेष्टा किया करता है, जिससे भगवान शीघ्र प्रसन्न हो, वैसे ही बहू का कर्त्तव्य है कि वह सास-ससुर, जेठ-जेठानी आदि पूजनीय जनों को देवताओं से भी बढ़कर माने और कर्त्तव्य समझकर उनको हर समय प्रसन्न करने के लिए निष्काम प्रेम-भाव से विशेष प्रयत्न करे तथा यह अनुभव करे कि इन सब में भगवान विराजमान है और जो कुछ कर रही हूं उसे वे देख रहे हैं तथा प्रसन्न हो रहे हैं।

सास को अपने आश्रित बहू आदि के विषय में यह समझना चाहिये कि बहू जो अपने माता-पिता को छोडक्र समझना चाहिये कि बहू जो अपने माता-पिता को छोड़कर इस घर में आयी है, वह उसकी लड़की से भी बढ़कर स्नेह की पात्री है। अपनी लड़की और बहू में कभी कोई अनबन या मतभेद हो जाये तो उसे अपनी पुत्रवधू का पक्ष लेना चाहिये, लड़की का नहीं। लड़की मां पर कभी नाराज नहीं होती। वह हृदय में समझती है कि यह मेरी मां है, यह मेरे विपक्ष में कभी मेरे अहित की बात नहीं कह सकती। किन्तु बहू के हृदय में तुरन्त यह बात आ सकती है कि सास अपनी लड़की का पक्ष करती है। सास यदि अपनी बेटी और बहू के साथ समान व्यवहार करती है तो भी बहू के चित में यह शंका हो सकती है कि यह अपनी लड़की का पक्ष कर रही है। इससे यही उचित है कि यह बहू के उचित मत का विशेष रूप से पक्ष करें।

●

मेरा जन्म 'गुरु पूर्णिमा'

राधास्वामी! राधास्वामी दयाल की दया! राधास्वामी सहाय! राधास्वामी!

मेरे बड़े भाई कमल सिंह 1992 में बड़े महाराज जी के पास पहली बार गए। फिर उन्होंने बड़े महाराज जी से नाम की बख्शीश ली और सत्संगी हो गए। मैं उस वक्त बी.ए. प्रथम वर्ष का छात्र था। मैं भी कभी-कभार बड़े भाई और माँ के साथ बड़े महाराज जी के दर्शन करने आया करता। मैं बड़े महाराज जी द्वारा फर्माये सत्संग की कैसेट भी सुनता था। उनमें स्वामी जी महाराज के शब्द है: 'गुरु मोहे अपना रूप दिखाओ।' परम सन्त हुजूर कंवर सिंह जी महाराज से भी जब भी मैं आशीर्वाद लेने जाता, तब भी यही शब्द मेरे मन में बार-बार उभरते क्योंकि तब तक मैंने सिर्फ लिखी लिखाई और सुनी-सुनाई बातों से गुरु महिमा जानी थी। 2 जुलाई 2004 को मेरे परम वंदनीय, प्रात: स्मरणीय सतगुरु हुजूर कंवर सिंह जी ने मुझे नाम की बख्शीश दी। मेरे सतगुरु महाराज ने मेरे मन में उठ रही तीव्र उत्कंठा को जान लिया 'गुरु मोहे अपना रूप दिखाओ।' जिस दिन मैंने मेरे सतगुरु से नाम की बख्शीश पाई, उसी दिन मुझे रात को सोये हुए महसुस हुआ कि मेरे सतगुरु महाराज मेरे पास है। उन्होंने स्नेह भरा हाथ मेरे सिर पर फेरते हुए कहा कि मेरा कौन सा रूप देखना चाहते हो? मैं तेरा पिता हूं, माँ हूं, भाई हूं, मित्र हूं, तेरी संतान हूं। तू जिस रूप की चाह करेगा, मैं उसी रूपसे तुझे दिखूंगा। उस दिन के बाद यह सत्य सिद्ध भी हुआ। जब भी मुझे किसी की जरूरत हुई मेरे सतगुरु मुझे उसी रूप में मिले। गुरु खेवनहार है और नि:संदेह पालनहार भी पर गुरु मित्र सा सच्चा, पिता सा कठोर, माँ सा कोमल, शिक्षक सा अनुशासित, संतान सा सुखद एहसासी भी है। यह मैंने मेरे सतगुरु महाराज कंवर सिंह जी की शरण में जाकर ही जाना। मैंने बड़े महाराज जी द्वारा फर्माये सत्संग की एक कैसेटे में उन्हीं के द्वारा बताए गए महर्षि वेद व्यास और उनके

राधास्वामी संत संदेश 15 नवम्बर 2004 अंक : 91

पुत्र शुकदेव जी का एक वृतांत सुना। उस वृतांत में महर्षि वेद व्यास जी अपने पुत्र शुकदेव को जनक जी की शरण में जाने को कहते हैं। जब शुकदेव जी वापिस आए तो वेदव्यास जी ने पूछा-बेटा! बता गुरु कैसा लगा? शुकदेव ने कहा कि पिताश्री क्या बताऊं? व्यास जी बोले, फिर भी बता क्या गुरु सूर्य जैसा है। शुकदेव ने कहा, प्रकाश तो हजारों सूर्य जैसा ही है पर सूर्य में गर्मी है मेरे गुरु में नहीं। उन्होंने फिर पूछा तो क्या गुरु चन्द्रमा जैसा है? शुकदेव ने कहा, हां पिताजी शीतलता तो चन्द्रमा जैसी ही है पर चन्द्रमा मेरे गुरु महाराज कंवर सिंह जी महाराज भी ऐसे ही है। मेरे सतगुरु भी बिरले ही है। मेरे सतगुरु तो बस सतगुरु है, उनके जैसा कोई नहीं।

। राधास्वामी ।

हरिकेश पंघाल
6 पार्क कालोनी, भिवानी।